ISSN : 2231-1173

पक्षधर

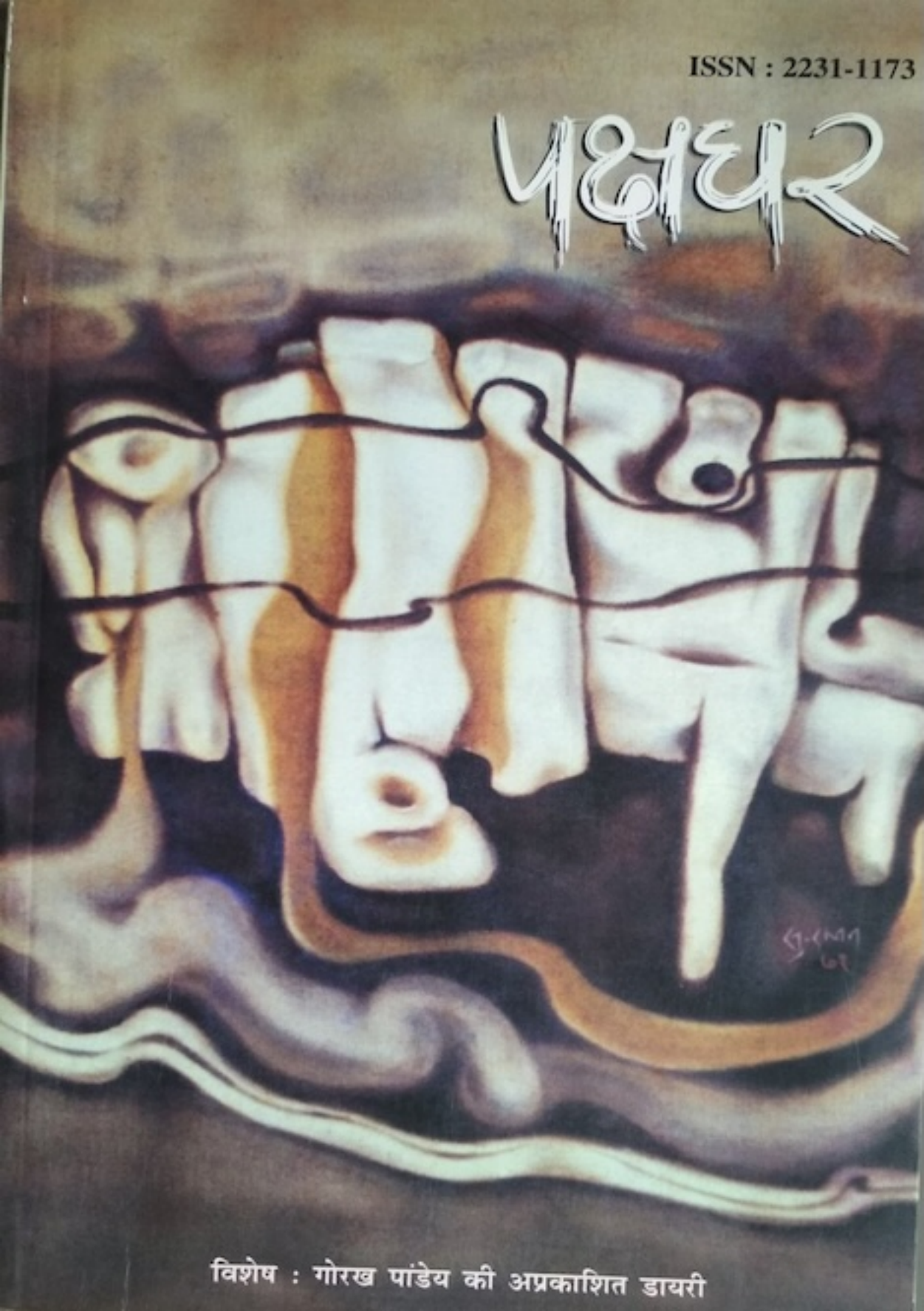

विशेष : गोरख पांडेय की अप्रकाशित डायरी

संस्थापक–दूधनाथ सिंह

पक्षधर

वर्ष : 5 अंक : 1 जन.-जून 2011 (अर्द्धवार्षिक)

संपादक

विनोद तिवारी

सह-संपादक

तेजभान

संकलन : 10

अक्षर संयोजन

काम्पैक्ट प्रिन्टर्स
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहादरा, दिल्ली-32

मूल्य :

एक प्रति : 50 रुपए

सदस्यता

वार्षिक : 100 रुपए
संस्थाओं के लिए : 150 रुपए
पंचवार्षिक : 500 रुपए
दस वार्षिक : 1000 रुपए
आजीवन : 2500 रुपए

संपादन/प्रकाशन
अवैतनिक/अव्यावसायिक

स्वामी-संपादक-प्रकाशक मुद्रक विनोद तिवारी द्वारा बी-2, तीसरी मंजिल, महेन्द्रू एन्क्लेव, स्टेडियम रोड, दिल्ली-110033 से प्रकाशित और दिव्या ऑफसेट प्रिन्टर्स, बी-1422, न्यू अशोक नगर, मयूर विहार, दिल्ली-96

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।

संपादकीय संपर्क

बी-2, तीसरी मंजिल, महेन्द्रू एन्क्लेव
स्टेडियम रोड, दिल्ली-110033
फ़ोन : 011-27240496
मो. : 9560236569
ई-मेल : pakshdharwarta@gmail.com

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त।

समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

अनुक्रम

संपादकीय

एक कवि एक राग/ *अरुण कमल*

शताब्दी स्मरण

अज्ञेय की काव्य-दृष्टि/ *नामवर सिंह* 5

जन्मसार्धशती

रवीन्द्रनाथ के पत्र/ *रामशंकर द्विवेदी* 12

कहानी

लौट जाओ कामरेड/ *कैलास चन्द्र* 26

विरासत/ *वंदना राग* 79

एक मधुर राग/ *भवानी सिंह* 95

आलेख

कामायनी : पाठ की अन्तर्पाठीयता/ *सुधीश पचौरी* 117

चित्रकथाओं में मीरा का छवि निर्माण/ *माधव हाड़ा* 125

कविताएँ

अवकाश प्राप्त/ *पी.सी. जोशी* 130

एक छोटा-सा ब्रेक लेकर ईश्वर के बहाने कुछ बकबक/ *कमलेश्वर साहू* 136

पाँच कविताएँ/ *सुरेश सेन 'निशांत'* 142

तीन कविताएँ/ *चन्द्रकांत* 153

देश-देशांतर

ओड़िया दलित कविता/ *अरुण होता* 156

कविताएँ

चार कविताएँ/ *रंजीता नायक* 170

छः कविताएँ/ *कुमार हसन* 175

पुस्तक के बहाने

आतिशे चिनार : आत्मकथा या आस्था का दस्तावेज़/ *मुहम्मद शीस ख़ान* 183

पुस्तक समीक्षा

कृति विकृति संस्कृति की पहचान का संघर्ष/ *जीतेन्द्र गुप्ता* 211

समय की पाठ रचना/ *नीलेश कुमार* 219

सच की बहुरंगी छवियों का साक्ष्य/ *निरंजन सहाय* 224

भूल-भटकों को राह दिखाते जंगल-गाँव/ *वंदना राग* 228

जो नहीं है उसका गम क्या, जैसे कि शर्म/ *प्रभात कुमार मिश्र* 234

अज्ञेय की काव्य-दृष्टि

✍ **नामवर सिंह**

सूर्य नारायण जी ने हिन्दी विभाग की ओर से 'सत्य प्रकाश मिश्र स्मृति व्याख्यानमाला' के लिए जब मुझसे इलाहाबाद में अज्ञेय पर व्याख्यान देने के लिए कहा तो मुझे अत्यन्त खुशी हुई। खुशी इसीलिए कि मैं स्वयं इस अवसर की तलाश में था। यह वर्ष हिन्दी के चार बड़े कवियों—अज्ञेय, शमशेर, नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल का जन्म शताब्दी वर्ष है। अजीब विडम्बना है कि मैंने नागार्जुन पर भाषण दिया है, लेख भी लिखे हैं उनकी कविताओं का चयन किया है, भूमिका लिखी है; शमशेर पर भी लेख लिखे हैं, भूमिका लिखी है, केदारनाथ अग्रवाल पर इसी इलाहाबाद में व्याख्यान दिया है और लेख भी लिखा है पर अज्ञेय पर प्रसंगवश कुछ चर्चाएँ जरूर की हैं लेकिन जमकर कुछ लिखा नहीं है। अतः मन में यह इच्छा थी कि अज्ञेय पर कुछ कहा जाए, लिखा जाए। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की बात याद आ रही है, कि जीवन में जो प्रार्थनाएँ अधूरी रह जाएँ उन्हें पूरी कर लेनी चाहिए। सूर्यनारायण ने इलाहाबाद में बोलने का यह अवसर उपलब्ध कराया इसके लिए मैं उनका और हिन्दी विभाग, इलाहाबाद का आभारी हूँ। इलाहाबाद में अज्ञेय पर बोलने का कुछ अर्थ है क्योंकि अज्ञेय के निर्माण में इलाहाबाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। सेना से लौटने के बाद वे इलाहाबाद आए थे। यह वह शहर है जहाँ रहते हुए उन्होंने 'प्रतीक' निकाला, 'दूसरा सप्तक' तैयार किया। 'नदी के द्वीप' की शुरुआत यहाँ वो कर चुके थे, कई कहानियाँ यहीं रहकर लिखीं। दिल्ली में बसने के पहले इलाहाबाद ही वह शहर है जहाँ अज्ञेय का नया संस्कार हुआ, उनका उदय हुआ। एक तरह से वात्स्यायन जी के साहित्य में एक नया मोड़ आता है इलाहाबाद में। इन सब बातों का श्रेय इलाहाबाद को है।

अज्ञेय से मेरी पहली मुलाकात अक्टूबर, 1945 की है जब मैं उदय प्रताप कॉलेज, बनारस में इण्टरमीडिएट का छात्र था। अमृतराय से मुझे यह सूचना मिली कि अज्ञेय बनारस आए हुए हैं और सरस्वती प्रेस में ठहरे हुए हैं। मैंने अपने गुरुदेव मार्कण्डेय सिंह से कहा कि अज्ञेय आए हुए हैं हम छात्र संघ और साहित्य-सभा की ओर से उन्हें बुलाना चाहते हैं। उन्होंने कहा जरूर बुलाओ। मैं सरस्वती प्रेस गया। वहाँ पहुँचा तो देखा कि लकड़ी के एक तख़त पर तीन-चार साल के बच्चे के साथ अज्ञेय बैठे हैं बच्चे के हाथ में बुद्ध की मिट्टी की एक लाल मूर्ति है जिससे दोनों खेल रहे हैं। मैंने प्रणाम किया और अपना प्रयोजन बताया। पहले तो वे अचकचाए कि कहाँ भाषण-वगैरह के चक्कर में डाल रहे हो। लेकिन जब मैंने बताया कि वहाँ प्रेमचंद, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नन्द दुलारे वाजपेयी जैसे लोग भाषण दे चुके हैं। कोई नामालूम सी जगह नहीं है वह, आप पता कर लीजिए।